

अर्ह

महाश्रमणी, शासन ज्योति, समाज सुधारिका श्री सुधा जी महाराज
के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशित

सचित्र

भगवान महावीर जीवन चरित्र

Sachitra Bhagwan Mahavir Jeevan Chritra

❀ प्रेरिका ❀

जिनशासन प्रभाविका जैन ज्योति संधारा साधिका उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की सुशिष्या
महासाध्वी सरलात्मा श्री सुधा जी महाराज

❀ लेखक ❀

पुरुषोत्तम जैन
रवीन्द्र जैन (मालेर कोटला)

❀ सम्पादिका ❀

साध्वी डा. स्मृति जी महाराज
(M.A., Ph.D.)

❀ प्रकाशक ❀

२६वीं महावीर जन्म-कल्याणक शताब्दी संयोजिका समिति, पंजाब
महावीर स्ट्रीट, पुराना बस स्टैण्ड, मालेर कोटला- १४८ ०२३ जिला संगरूर(पंजाब)

महाश्रमणी, शासन ज्योति, समाज सुधारिका श्री सुधा जी महाराज
के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशित

- **पुस्तक** : सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र
Sachitra Bhagwan Mahavir Jeevan Chritra
- **सम्पादन** : संधारा साधिका जैन ज्योति उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की सुशिष्या
महासाध्वी श्री सुधा जी महाराज
- **लेखक** : पुरुषोत्तम जैन, रवीन्द्र जैन
- **संपादिका** : साध्वी डा. स्मृति जी महाराज (M.A., Ph.D.)
- **प्रथमावृत्ति** : जुलाई 2000
26वीं महावीर जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित
- **द्वितीयावृत्ति** : अगस्त 2009
- **प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान** :
➔ 26वीं महावीर जन्म कल्याणक शताब्दी संयोजिका समिति, पंजाब
महावीर ट्रस्ट, पुराना बस स्टैण्ड, मालेर कोटला- २४८ ०२३ जिला संगरूर (पंजाब)
फोन : 098158-05555
➔ भूषण दी हट्टी
सर्राफा बाजार, अम्बाला शहर (पंजाब)
- **चित्र सौजन्य** :
वाणी भूषण उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी द्वारा संपादित पद्य प्रकाशन, नरेला, दिल्ली
द्वारा प्रकाशित कल्पसूत्र के अन्तर्गत भगवान महावीर जीवन प्रसंग।
- **मुद्रण** :
विमल विवेक, 96, राजा गार्डन एक्सटेंशन, जलंधर मो.-094171-69405
- **मूल्य** :
पांच सौ रूपए मात्र (500/-)

प्रकाशकीय



पिछले ३० वर्षों से हमारी संस्था २५वीं महावीर निर्वाण शताब्दी संयोजिका समिति, पंजाब के नाम से काम करती थी, अब वही संस्था २६वीं महावीर जन्म-कल्याणक शताब्दी संयोजिका समिति, पंजाब के रूप में सारे पंजाब में जैनधर्म का प्रचार कर रही है। अब तक पंजाबी जैन साहित्य पर ५० ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं। भविष्य में यह प्रचार का कार्य अभी तक चालू है।

जिनशासन प्रभाविका साध्वी जैन ज्योति श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज इस संस्था की संस्थापक प्रेरिका थी। यह समिति जैन एकता, शाकाहार व जैन संस्कृति की रक्षा के लिए समर्पित संस्था है। समिति की प्रेरणा से पंजाबी विश्वविद्यालय में जैन चैयर की स्थापना हुई। वहां समिति व साध्वी जी दोनों ने विपुल मात्रा में जैन साहित्य जन साधारण तक पहुंचाया। इण्टरनेशनल पार्वती जैन अवार्ड, इण्टरनेशनल भगवान महावीर शाकाहार अवार्ड, आचार्य श्री आत्माराम भाषण माला आदिश्वर धाम कुप्पकला में साध्वी श्री स्वर्णा जैन पुस्तकालय की स्थापना समिति की प्रमुख देन है।

गुरुणी साध्वी स्वर्णा जी महाराज के देवलोक गमन के कारण उनकी प्रमुख शिष्याओं ने यह काम अपने हाथों में उठाया है। गुरुणी साध्वी स्वर्णा जी महाराज की प्रमुख शिष्या शान्त मुद्रा, गुप्त तपस्विनी साध्वी राजकुमारी जी व साध्वी सुधा जी महाराज हैं। साध्वी राजकुमारी जी के आशीर्वाद से यह कार्य इस समिति के लेखकद्वय के हाथों सम्पन्न हुआ। प्रभु महावीर के २६०० साला जन्म दिवस पर हमारी संस्था की ओर से यह तुच्छ भेंट प्रभु महावीर के चरणों में समर्पित थी। अब इसका प्रकाशन गुरुणी श्री सुधा जी महाराज के जन्म उत्सव पर हो रहा है। समिति का प्रमुख कार्य तो पंजाबी भाषा के अन्दर धर्म-प्रचार का रहा है। पर लम्बे समय से प्रभु महावीर का सर्वमान्य हिन्दी जीवन-चरित्र विद्वानों के लिए कमी को पूरा करेगा। विद्वत् वर्ग हमारे प्रकाशन को सम्मान देगा।

संस्था साध्वी सुधा जी (प्रेरिका) व समस्त गुरु भक्तों का प्रकाशन सहयोग के लिए धन्यवाद करती है और भविष्य में सहयोग की आशा करती है।

३१.३.२००९

मण्डी गोविंदगढ़

संयोजक

पुरुषोत्तम जैन

पाठकों के बढ़ते अनुरोध पर इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

जैन आचार्य डा. शिवमुनि जी महाराज का आशीर्वचन



२६००वीं महावीर जन्म कल्याण शताब्दी संयोगिका समिति पंजाब द्वारा भगवान महावीर के जीवन को संस्पर्श करने वाले सचित्र जीवन चरित्र प्रकाशित करने जा रही है। २१वीं सदी की ओर बढ़ते हुए देश में सचित्र जीवन चरित्रों की प्रधानता बढ़ रही है। सचित्र जीवन चरित्र को देखने मात्र से ही बहुत सारी बातें सामान्य व्यक्ति को भी प्रभावित कर जाती हैं, एवं अनेक भविजनों को आत्म बोध की ओर प्रेरित करती हैं। ऐसे तो भगवान महावीर के अनेक चरित्र प्रकाशित हुए हैं, लेकिन इस चरित्र की विशेषता है कि इसमें शास्त्र, चुर्ण, निर्युक्ति एवं अब तक के सभी प्रकाशित चरित्रों का सहयोग लेकर उप प्रवर्तिनी महासती श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की शिष्या महासती श्री सुधा जी महाराज की प्रेरणा से एवं इसका सुन्दर संपादन महासती डा. स्मृति जी महाराज ने किया है। महासती जी का पुरुषार्थ अनुमोदनीय है।

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक द्वय

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक श्री पुरुषोत्तम जैन मंडी गोबिंदगढ़ व श्री रवीन्द्र जैन मालेर कोटला पंजाबी जैन साहित्य के प्रथम लेखक, अनुवादक व सम्पादक हैं। अब तक इनकी पंजाबी व हिंदी भाषा में ५० के करीब पुस्तकें छप चुकी हैं। मेरे से यह दोनों चिरपरिचित हैं। इनके साहित्यक कार्य से प्रसन्न होकर भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह इनको श्रमणोपासक पद से विभूषित किया। यह पंजाब में साहित्यक व सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। पहले इन्होंने २५००वीं महावीर निर्वाण शताब्दी समारोह समिति पंजाब की स्थापना की थी। दोनों देव, गुरु व धर्म के प्रति समर्पित हैं। इसका प्रमाण प्रस्तुत ग्रंथ है। मेरे शोधनिबंध के समय इन्होंने पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में मेरी काफी सहायता की थी। प्रस्तुत ग्रंथ इनके धर्म के समर्पित जीवन का जीता-जागता उदाहरण है। हर्ष का विषय है कि इन्होंने सारा साहित्य साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा व दिशा निर्देश में लिखा। पंजाबी भाषा में इन्होंने भगवान महावीर के चरित्र पहले लिखा था, जिसके दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

भगवान महावीर के २६००वें जन्म कल्याणक पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक श्री रवीन्द्र जैन, श्री पुरुषोत्तम जैन द्वारा प्रकाशित 'सचित्र तीर्थंकर भगवान महावीर जीवन चरित्र' पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। अब द्वितीय संस्करण का प्रकाशन साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की सुशिष्य महाश्रमणी शासन नायिका साध्वी श्री सुधा जी के जन्म महोत्सव पर प्रकाशित हो रहा है। मैं साध्वी जी को उनके कार्य की अनुमोदना करता हुआ उन्हें साधुवाद देता हूँ। मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

भगवान महावीर के जीवन चरित्र पर जितना भी लिखा जाए उतना कम है। उनके संदेशों को विश्व व्यापी बनाने में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है। इसको पढ़कर जन-मानस में भगवान महावीर के सिद्धांतों के प्रति रुचि जागृत हो और अपने जीवन में ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित हो। विश्व में अहिंसा, शांति और प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हुए परस्पररोहो जीवानाम् के सिद्धांत को लागू करें, यही हार्दिक मंगल कामना।

विश्व में साइंस ऑफ नॉन अटेचमेंट का प्रचार हो सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वेसन्तु निरामया।

आचार्य शिवमुनि

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के विद्वान शिष्य तपस्वी वयोवृद्ध मुनि श्री जयचंद लाल जी महाराज का मंगलमय आशीर्वाद



भारत एक आध्यात्मिक देश है। इस धरा पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया, अपनी साधना से अध्यात्मिक चेतना को जागृत रखा। अध्यात्म के सुमेरु, अहिंसा अवतार श्रमण भगवान महावीर का जन्म इस धरा का अहोभाग्य है। जिनके जन्म से भारत में समृद्धि का आगमन हुआ। भगवान महावीर का जीवन दर्शन साधना की सरिता, कष्टों की करुण कथा, उपदेशामृत का झरना है। भगवान महावीर के जीवन को शब्दों को जामा पहनाना आसान नहीं है और एक पुस्तक में समेटना भी संभव नहीं है। फिर भी विद्वान लेखक बन्धु अपनी लेखनी से उस महासूर्य को कतिपय किरणों में समेटने का प्रयत्न करते हैं।

पंजाबी भाषा के प्रथम लेखक द्वय जैन साहित्यकार पुरुषोत्तम जैन मंडी गोबिन्दगढ़ व रविन्द्र जैन मालेरकोटला ने भगवान महावीर की जीवनी सत्ताइस भवों के साथ लिखी है। यह सर्व मान्य, सरल सुबोध भाषा में जनोपयोगी पुस्तक है। इस पुस्तक का मैंने पारायण किया है। मैं यह कहता हूँ कि प्रत्येक जैन को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

भगवान महावीर की जीवनी एक रहस्य है। कष्ट प्रधान साधना काल ही उन्हें महावीर बनाता है। मूल नाम तो वर्धमान है।

हर्ष का विषय है कि पुरुषोत्तम जैन व रवीन्द्र जैन विगत 40 वर्षों से धर्म के प्रति समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं। लेखक द्वय पंजाबी भाषा के प्रथम जैन लेखक हैं। इन्होंने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी, जैन वर्ल्ड फाउंडेशन ने उन्हें अमरीका ने ज्वेल ऑफ जैन वर्ल्ड, यूनेस्को व भाषा विभाग पंजाब ने कार्यों का मूल्यांकन करते हुए सम्मानित किया है। दोनों ने मिलकर 50 पुस्तकों की रचना की है। दोनों का प्रेम मान बहुत गहरा है।

इस पुस्तक की सम्पादिका डा. साध्वी स्मृति जी ने इसमें पुस्तक को संवारने में महत्वपूर्ण परिश्रम किया है। साध्वी जी साधुवाद की पात्र हैं। जब आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का पंजाब पदार्पण हुआ तब इन दोनों विद्वानों ने पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला में गरिमामय कार्यक्रम की समायोजना कर जैन धर्म की प्रभावना की। आचार्य प्रवर दोनों विद्वानों पर कृपा रखते हैं।

ये दोनों विद्वान इस प्रकार साहित्य रचनाकर जैन धर्म की प्रभावना करते रहें यही मंगल कामना है।

ओम अर्हम्!

मुनि जयचंद लाल
तेरापंथ भवन, पंचकूला,
19.05.2009

आशीर्वाद



यह बात सर्वमान्य है कि संसार के प्राचीनतम धर्मों में जैनधर्म का अपना स्थान है। जैन धर्म न तो किसी धर्म का अंग है, न कोई अन्य धर्म जैनधर्म का। जैनधर्म स्वतन्त्र धर्म है। इसके ग्रन्थ, देव, दर्शन, तत्त्व चिन्तन अन्य धर्मों से भिन्न हैं। ये भारतीय धर्म है जिसकी अपनी परम्परा है जिसे हम श्रमण परम्परा कहते हैं। इसका प्राचीन नाम निर्गन्ध भी प्राप्त होता है। जैनधर्म अनादि है। इसका कोई शुरु करने वाला नहीं। तीर्थंकर भी इस धर्म के प्रचारक संस्थापक होते हैं। इस युग में भगवान ऋषभ से प्रभु महावीर तक २४ तीर्थंकर संसार को अहिंसा, अनेकान्त व अपरिग्रह का मार्ग बताते रहे हैं। उनके पवित्र वचनों का संकलन उनके ज्ञानी गणधरों व आचार्यों ने सूत्रों के रूप में किया।

इन तीर्थंकरों में अन्तिम तीर्थंकर प्रभु महावीर संसार के युग पुरुषों में अपना सर्वोपरि स्थान रखते हैं। उनके जीवन पर अनेक आचार्यों ने भिन्न-भिन्न भाषाओं में, विभिन्न कालों में अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। इस युग में भी अंग्रेजी, उर्दू में प्रभु महावीर का जीवन-चरित्र लिखा गया। हमारी गुरुणी जिनशासन प्रभाविका उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी की प्रेरणा से पंजाबी में जीवन-चरित्र लिखा गया। वे पंजाबी जैन साहित्य की प्रथम प्रेरिका व लेखिका हैं। उन्हीं के शिष्य श्रावक शिरोमणि, समाज रत्न लेखक रविन्द्र जैन व पुरुषोत्तम जैन ने यह कार्य सम्पन्न किया।

उपप्रवर्तिनी, संथारा साधिका गुरुणी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज के स्वर्गारोहण के पश्चात उनके धर्म-प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाने का बीड़ा मेरी गुरू बहिन गुरुणी जी की विदुषी शिष्या, सरल आत्मा महासाध्वी सुधा जी ने उठाया है। पहले इन्हीं की प्रेरणा से गुरुणी जी की दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती पर अभिनन्दन ग्रन्थ की रचना हुई। प्रभु महावीर के २६०० जन्म कल्याणक पर प्रभु महावीर का सचित्र जीवन-चरित्र साध्वी सुधा जी के दिशा-निर्देशन व प्रेरणा से प्रकाशित हुआ। अब इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इस हिन्दी भाषा की कृति के लेखन का कार्य भी हमारी गुरुणी के आशीर्वाद से दोनों धर्म-भ्राताओं रवीन्द्र जैन व पुरुषोत्तम जैन के हाथों से सम्पन्न हुआ है।

मैं इस कार्य की प्रेरिका साध्वी सुधा को अपनी शुभ कामना देती हूँ, जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि वह इसी तरह देव, गुरु व धर्म की सेवा करती रहें। साध्वी सुधा जी को जन्म दिवस की मंगल कामनाएं।

मैं दोनों लेखकों को आशीर्वाद देती हूँ कि वह धर्म-कार्य में हमारी धर्म-यात्रा में सहायक बनें। साध्वी डा. स्मृति जी को भी उनके कुशल संपादन के लिए साधुवाद व आशीर्वाद देती हूँ।

मैं अपने समस्त साध्वी परिवार की भी आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य में दोनों भाईयों व साध्वी सुधा का हाथ बटाया है।

मैं सभी दानी भाई-बहिनों को साधुवाद देती हूँ। लेखक, प्रकाशक व दानी सभी गुरुणी जी के आशीर्वाद के पात्र हैं।

पाठकों से प्रार्थना है कि पुस्तक की त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर इस ग्रन्थ के उद्देश्य को समझें। तभी लेखकों का श्रम सार्थक होगा।

अतः मैं व समस्त साध्वी परिवार यह ग्रन्थ जिनशासन साध्वी रत्न, जैन ज्योति श्री स्वर्णकान्ता जी के कर-कमलों में सहज भाव से समर्पित करते हैं। प्रभु महावीर का यह जीवन भान्त धारणाओं को समाप्त करेगा।

- साध्वी राजकुमारी, लुधियाना

पेरिका की कलम से



भगवान महावीर का २६०० साला जन्म पर विभिन्न संस्थाएं विभिन्न आयोजन सम्पन्न करने जा रही हैं। पाठकों को याद हो प्रभु महावीर का २५००वां निर्वाण उत्सव उपप्रवर्तिनी गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से मनाया गया था। तब प्रभु महावीर का निर्वाण मनाने जैनों के चारों सम्प्रदाओं की समिति बनी। इसी समिति ने सारे जन कल्याण के कार्य कर दिए। परन्तु पूज्य गुरुवर्या को जैन समाज की एक कमी खटकती रही वह थी कि जैनों का साहित्य हर स्थानीय भाषा में था, पर पंजाबी में न था। गुरुणी जी ने इस कार्य के लिए श्री पुरुषोत्तम जैन व श्री रवीन्द्र जैन, मालेर कोटला को तैयार किया। दोनों ने सारा काम संभाला। पहले सरकारी स्तर की समिति बनी। जैन समारोह किए। रोड, नगर का नामकरण प्रभु महावीर के नाम पर रखे। पहली बार चारों सम्प्रदाय एक झण्डे एक निशाने के तले इकट्ठे हुए। फिर हमने एक साहित्य समिति का गठन भी किया, जो पंजाबी, हिन्दी भाषा में, जैन समूह के लिए साहित्य तैयार करे। पहले पंजाब में जैन साहित्य उर्दू भाषा में प्राप्त था। गांवों में गुरुमुखी पढ़ाई जाती थी, जो आज पंजाबी भाषा की लिपि है।

मैंने गुरुणी जी के आशीर्वाद से अपने निर्देशन में इन दोनों को जरूरी काम दिया। इसमें आगम अनुवाद, जैन कहानी लेखन, मूल पुस्तकों के रूप में ५० ग्रन्थ छप चुके हैं। हिन्दी में अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। इसी निर्वाण शताब्दी पर पंजाबी विश्वविद्यालय में जैन चेयर की स्थापना हुई। कालेज, स्कूल, धर्मशाला, पुस्तकालय, अस्पताल की स्थापना हुई। भाषणमाला का आयोजन हुआ। गुरुणी जी का सन्देश यूनिवर्सिटी से राष्ट्रपति भवन तक पहुंचा। जैन विद्वानों को भाषण के लिए आमन्त्रित किया गया, सम्मान किया गया। यह कार्य लगातार चालू है। अब भगवान महावीर का २६०० साला जन्म आ रहा है हमें उसे धर्म प्रचार द्वारा मनाना है।

गुरुणी जी की काफी समय से इच्छा थी कि प्रभु महावीर का सरल सचित्र जीवन शास्त्र पर आधारित हो। मैंने गुरुणी जी की इच्छा को समझा। मैंने रवीन्द्र जैन, मालेर कोटला और पुरुषोत्तम जैन को शास्त्रों में से हिन्दू दिए। फिर प्रकाशित २७ ग्रन्थों की सूची तैयार की। इन दोनों ने स्वयं भी लाइब्रेरियों से उपलब्ध महावीर चरित्र पढ़े।

आधारभूत ग्रन्थ महावीर: एक अनुशीलन लेखक आचार्य देवेन्द्र मुनि व मुनि श्री कल्याणविजय कृत श्रमण महावीर ग्रन्थ को चुना गया। हम इन दोनों लेखकों व ग्रन्थ प्रकाशकों के अभारी हैं। शास्त्र चर्चा का आधार मुनि श्री कल्याणगन विजय कृत श्रमण महावीर हैं।

परम पूज्य उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के शिष्यरत्न उपप्रवर्तक वाणीभूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने भी कृपाकर कल्पसूत्र के रंगीन चित्रों से भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित चित्र लेने की स्वीकृति प्रदान की। उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए शब्द मिलना असंभव है।

संधारा साधिका गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से हमने २६वीं महावीर जन्म शताब्दी संयोजिका समिति पंजाब का निर्माण किया है। हर्ष का विषय है कि अभी इस समिति ने प्रकाशन का काम हाथ में लिया है। साथ में आदिश्वर धाम कुम्पकला के अंदर साध्वी स्वर्णकाता जैन पुस्तकालय की स्थापना का कार्य शुरू किया है। अभी तक ५० छोटी पुस्तकें छप चुकी हैं। भविष्य में अन्य पंजाबी, हिन्दी अप्रकाशित जैन साहित्य प्रकाशित करने का इरादा है।

सबसे अधिक धन्यवाद दानी सज्जनों का है, उन्होंने अपने धन को सफल किया। वे समस्त साध्वी परिवार, लेखकद्वय, प्रकाशक सभी गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के आशीर्वाद के पात्र हैं।

- साध्वी सुधा

सम्पादकीय



दर्शन बुद्धि का विषय है, ज्ञान आत्मा का विषय है।

दर्शन चिन्तन की गहराई में उतरता है, जीव और जगत् की पहलियां सुलझाता है, जबकि ज्ञान जीवन से मुखरित होकर चरित्र बनता है और जीवन की श्रेष्ठता तथा पवित्रता के शिखर पर पहुंचता है।

भगवान महावीर केवल एक महान दार्शनिक ही नहीं थे, वे गहरे ज्ञानी-आत्मज्ञानी थे। उनका ज्ञान जीवन के प्रत्येक कोण को स्पर्श करने वाला, उसका परिष्कार करने वाला है और जीवन को पारदर्शिता प्रदान करने वाला था।

उन्होंने जो कुछ कहा, प्रतिपादन किया, वह केवल चिन्तन का परिणाम नहीं था, किन्तु जीवन का जिया हुआ गहरा अखण्ड सत्य था। उसमें जीवंतता थी, प्राणवत्ता थी और एक प्रखर तेजस्विता थी। दूसरों की अनुभूति को आत्मसात् करके स्वयं की अनुभूति बनाई थी और वही अनुभूति अभिव्यक्ति बनी। इसलिए उनकी वाणी में दीर्घकालीन साधना का अनुभव मुखरित था। जीव-मात्र की भावनाओं, संवेदनाओं और जीजिविषाओं का स्पन्दन था उसमें, इसलिए वह जीव मात्र के कल्याण और सुख-शान्ति का निमित्त बनी।

मेरी पूज्य गुरुणीवर्या साध्वी रत्न श्री सुधाजी महाराज की बहुत वर्षों से भावना थी कि भगवान महावीर के साधनामय और परोपकार परायण जीवन की घटनाओं का सरल और सहज रूप में लिखकर सभी के लिए प्रस्तुत किया जाए। २५००वीं महावीर निर्वाण शताब्दी वर्ष पर पूज्य महागुरुणी साध्वी रत्न उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज ने भी इस विषय में दो-तीन बार भाई रवीन्द्र जैन व भाई पुरुषोत्तम जैन को प्रेरणा दी और अपनी अन्तर इच्छा आशीर्वाद रूप में व्यक्त की, कि महातपोधनी श्रमण श्रेष्ठ भगवान महावीर का जीवन चरित्र लिखें। पूज्य महागुरुणी जी की भावना को ग्रहण कर प्रेरक शब्दों की प्रेरणा से स्फुरणा प्राप्त कर श्री रवीन्द्र जैन व श्री पुरुषोत्तम जैन ने भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन वृत्त लिपिबद्ध किया। उन्होंने अनेक ग्रंथों का परिशीलन किया और फिर अपना चिन्तन साथ में जोड़ते हुए उसका लेखन भी किया। पूज्य गुरुणी वर्या की प्रेरणा का ही सुपरिणाम आपके हाथों में है।

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक हमारे धर्मभाता हैं, लगभग ३० वर्षों से जैन साहित्य के सेवा में कार्यरत हैं। गुरुणी की प्रेरणा से भाई पुरुषोत्तम जैन व भाई रवीन्द्र जैन ने हिन्दी व पंजाबी भाषा में जैनधर्म पर ५० से ज्यादा ग्रंथ लिखे हैं। पंजाबी भाषा के यह लेखक, अनुवादक, टीकाकार, कथाकार हैं, जिन्होंने जैन जगत् को पंजाबी लोगों तक पहुंचाया है। दोनों भाताओं ने गुरुणी जी की प्रेरणा से जैन आगमों पर पंजाबी टीकाएं लिखी हैं, जिनमें अधिकतर प्रकाशित हो चुकी हैं।

दोनों ने पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में जैन चेयर, आचार्य श्री आत्माराम जैन भाषण माला व संस्कृत अवार्ड की स्थापना की है। मेरे दोनों भाताओं ने १० वर्षों से गुरुणी जी की प्रेरणा से प्रस्तुत ग्रंथ बड़ी लगन व मेहनत से तैयार किया है। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे ऐसे महान ग्रंथ का संपादन करने का अवसर मिला है।

सन् 2001 का वर्ष प्रभु महावीर के २६००वें साला जन्म जयन्ती के रूप विश्व भर में मनाया जा रहा था। इस अवसर पर समिति ने दो कार्यों को अपने हाथों में लिया - (१) आदिश्वर धाम में साध्वी स्वर्णा जैन पुस्तकालय और (२) प्रस्तुत ग्रंथ सचित्र श्रमण भगवान महावीर चरित्र। इसके अतिरिक्त अनेकों पंजाबी जैन साहित्य की गतिविधियां जारी हैं। श्री रविंद्र ज व श्री पुरुषोत्तम जी का भाषा विभाग पंजाब द्वारा सम्मान हो चुका है। जैन वर्ल्ड फाऊण्डेशन ने आपको ज्वेल आफ जैन वर्ल्ड की गरिमामयी उपाधि से अलंकृत किया। इससे पहले राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी, इन्हें श्रमणोपासक पद से विभूषित कर चुके हैं। इनकी साहित्यिक व सामाजिक गतिविधियां सतत जारी हैं। भविष्य में यह देव, गुरु व धर्मों की भक्ति कर उनके आशीर्वाद प्राप्त करते रहेंगे, यही मेरी शुभकामना है। प्रस्तुत ग्रंथ में उन्होंने कितना श्रम किया है, यह भूमिका से पता लग जाता है। इस ग्रंथ में उन्होंने जैनधर्म के दोनों सम्प्रदायों की मान्यताओं का पूर्ण ध्यान रखा है और कोशिश की गई है, कोई ऐसी बात न लिखी जाए, जिससे किसी परम्परा के विरुद्ध हो।

अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मैंने जो कुछ संशोधन किया है, वह संतोष और समाधान हेतु ही किया है और इसको सजाने संवारने तथा सुन्दर चित्रों को संयोजित करके एक परिपूर्ण पुस्तक स्वरूप प्रदान करने में भाई राजेश जी सुराना ने भी बहुत श्रम किया है। सबके श्रम का, सबकी सद्भावना का यह सफल सचित्र भगवान महावीर का जीवन दर्शन है। इस कार्य को मुझे सौंपने के लिए मेरी गुरुणी ने योग्य समझा, इसके लिए नतमस्तक उनको आभार प्रगट करती हूं।

कल्पसूत्र के अन्तर्गत भगवान महावीर जीवन विषयक चित्र प्राप्त कराने में उपप्रवर्तक वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने जो आत्मीय अनुग्रह प्रदान किया है वह मेरे लिए उत्साहवर्धक आशीर्वाद रूप है।

प्रथम संस्करण के रूप में भगवान महावीर की २६००वीं जन्म जयन्ती वर्ष के अवसर पर एक विनम्र श्रद्धांजलि उस परम पुरुष के चरणों में अर्पित की गई थी। मुझे विश्वास है, वीतराग देव का यह तपोमय दिव्य जीवन और उनके जन कल्याणकारी उपदेश, अध्यात्म रस भरी तत्त्व चर्चाएं हमारे अन्तःकरण को सदा पवित्रता तथा श्रेष्ठता के पथ पर बढ़ाने में सम्बल बनेगा। संपादन कार्य में अगर कोई त्रुटि रह गई हो तो मैं समस्त श्रीसंघ से क्षमायाचना करती हूं। एक बार मैं पुनः अपनी गुरुणी व इस ग्रंथ की प्रेरिका महाश्रमणी, शासन ज्योति श्री सुधा जी महाराज का आभार प्रकट करती हूं। दोनों धर्म भाताओं को इस कार्य के लिए साधुवाद देती हूं कि उनके माध्यम से इस ऐतिहासिक कृति का संपादन करने का मुझे शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

यह द्वितीय संस्करण कुछ संशोधनों के साथ प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रंथ का प्रचार प्रसार सभी जैन सम्प्रदायों में हो रहा है। कई मुनिराज व साध्वी वृंद इसकी पर्युषणों के दिनों में वाचना करते हैं, यही हमारी सफलता है।

अतीव हर्ष का विषय है कि यह प्रकाशन महाश्रमणी, शासन ज्योति, मम जीवन बोधिनी गुरुणी श्री सुधा जी महाराज के जन्मदिवस पर प्रकाशित हो रहा है। उनकी आरोग्यमय संयमयात्रा की शुभेच्छा के लिए शासनेश प्रभु के श्री चरणों में मन्तव्यमयी मंगल कामना प्रेषित करती हूं।

-साध्वी स्मृति
एम.ए.पी.एच.डी

भूमिका

भारत धर्म-प्रधान देश है। यहां बहुत से धर्मों का जन्म हुआ है। जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। यह धर्म अनादि है, शाश्वत है।

जैनधर्म में तीर्थंकर परम्परा है जिसमें २४ तीर्थंकर भरत क्षेत्र में जन्म लेते हैं। महाविदेह क्षेत्र में यह परम्परा शाश्वत रहती है। इस क्षेत्र में तीर्थंकरों का कभी अभाव नहीं रहता।

भगवान ऋषभदेव प्रथम भिक्षु, प्रथम तपस्वी, माने गए हैं। उन्होंने मानव सभ्यता को असि, मसि, कृषि प्रदान की। स्त्रियों को उन्होंने ६४ कलाएं व पुरुषों को ७२ कलाएं सिखाईं। वह मानव सभ्यता, धर्म के आदीश्वर, विश्वकर्मा थे। उन्हीं के पुत्र के नाम से इस आर्यवर्त का नाम भारतवर्ष पड़ा। फिर उनके बाद २३ तीर्थंकरों ने श्रमण (धर्म) संस्कृति का प्रचार किया।

इसी परम्परा के अन्तिम तीर्थंकर थे वर्द्धमान, ज्ञातपुत्र भगवान महावीर। प्रभु महावीर पर लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। पर भक्ति की शक्ति से कुछ भी असम्भव नहीं है। प्रश्न हो सकता है कि हमारे ग्रन्थ में नया क्या है? नया कुछ नहीं है। हमने तो महापुरुषों द्वारा लिखे ग्रन्थों का अनुकरण किया है। स्पष्ट शब्दों में कहें, तो इस ग्रन्थ में हमारा अपना कुछ नहीं, मात्र पूर्व आचार्यों ने जैसे प्रभु महावीर का गुणगान किया है उनका पवित्र चरित्र लिखा है, हमने भी उन भक्तिपूर्ण स्वरों में अपना स्वर मिलाया है। उन्हीं का अनुमोदन किया है। यही अनुमोदन हमारी भक्ति है।

निर्युक्ति साहित्य

निर्युक्तिकारों में आचार्य भद्रबाहु का नाम प्रमुख है। इनका समय विक्रम की ५वीं-६वीं सदी है। आवश्यकनिर्युक्ति में प्रभु महावीर के २७ भवों, स्वप्न, केवलज्ञान के समय विहार का वर्णन प्राप्त होता है। इस निर्युक्ति में गणधरवाद उपलब्ध है। इन्द्रभूति आदि द्वारा पावापुरी में यज्ञ का आयोजन, उसमें इन्द्रभूति आदि ११ गणधरों व उनके शिष्यों के भाग लेने का वर्णन है। फिर प्रभु महावीर से उनकी दार्शनिक चर्चाओं का वर्णन है। इस निर्युक्ति पर निम्नलिखित संस्कृत टीकाएं उपलब्ध हैं जिनका विवरण इस प्रकार है-

१. मलयगिरि वृत्ति	आचार्य श्री मलयगिरि
२. हरिभद्रीय वृत्ति	आचार्य श्री हरिभद्रसूरि
३. प्रदेश व्याख्या	मल्लधारी आचार्य श्री हेमचन्द्र जी
४. विशेषावश्यकभाष्य	श्री जिनभद्रगणि क्षमा श्रमण जी
५. टीका	मल्लधारी आचार्य श्री हेमचन्द्र जी
६. आवश्यकनिर्युक्ति दीपिका	श्री विजयदानसूरि जी
७. चूर्णि	श्री जिनदासगणी महत्तर

चूर्णि साहित्य

चूर्णि में संस्कृत व प्राकृत दोनों भाषाएं मिलती हैं। इस चूर्णि साहित्य में प्रमुख आवश्यक चूर्णि हैं

जिसमें प्रभु महावीर की तपस्या का वर्णन विशद रूप में मिलता है। चूर्ण ग्रन्थों के अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रन्थों में प्रभु महावीर का जीवन-वृत्त प्राकृत भाषा में मिलता है-

१. चउपन्न महापुरुष चरिअं	श्री शीलंकाचार्य	विक्रम ८६८
२. महावीर चरिअं	श्री नेमिचन्द्रसूरि	विक्रम ११४१
३. महावीर चरिअं	श्री गुणचन्द्रसूरि	विक्रम ११३९

प्रभु महावीर का जीवन संस्कृत भाषा में भी निम्नलिखित आचार्यों ने लिखा है। यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में अपना महत्त्व रखते हैं। ज्यादातर ग्रन्थ दिगम्बर आचार्यों ने लिखे हैं-

१. त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र	कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र जी	वि.सं.११२६-११२९
२. लघु त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र	सोमप्रभ आचार्य	
३. लघु त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र	महामहिम उपाध्याय श्री मेघविजय जी	
४. तिरैसठ स्मृतिशास्त्र	पण्डित आशाधर जी	
५. महापुराण	मेरुतुंग	
६. पुराण सार संग्रह	अज्ञात	
७. रायेमह्ण अभोदय	पदमचन्द्र	१६१५
८. चतुर्विंशती जिनचरित्र	अमरचन्द्र	
९. वीरोदयकाव्य	मुनि ज्ञानसागर	२०वीं सदी
१०. उत्तरपुराण	आचार्य गुणभद्र	
११. वर्द्धमान चरित्रम्	महाकवि असंग	
१२. वीर वर्द्धमान चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	१५वीं शताब्दी

अपभ्रंश साहित्य

इस भाषा में जैन साहित्य विपुल मात्रा में उपलब्ध है। हिन्दी भाषा इसी भाषा से निकली है। कुछ दूसरे साहित्य को छोड़ सारा साहित्य जैन है। प्रभु महावीर पर लिखे ग्रन्थ का वर्णन इस प्रकार है-

१. तिरैसठ महापुरुष गुणालंकार महापुराण	आचार्य पुष्पमित्र	९वीं-१०वीं सदी
२. वढ्माण कहा	जयमित्र	सं. १५४५
३. वढ्माण कहा	अभयदेवसूरि	सं. १५१२
४. महावीर चरित्र	पुष्यदंत	
५. महावीर चरित्र	रङ्गू	
६. वढ्माण कहा	कवि नरषेण	सं. १५१२
७. वढ्माण चरित्र	श्री धर्मकवि	

प्रादेशिक भाषाओं में राजस्थानी साहित्य का प्रमुख स्थान है। इस साहित्य में रास व पुराण परम्परा प्रमुख है। भगवान महावीर पर इस भाषा में अभी इस भाषा के हजारों ग्रन्थ अप्रकाशित हैं। निम्नलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं-

ग्रन्थ का नाम	कवि का नाम	रचनाकाल
१. महावीर रास	कवि कुमुदचन्द्र	
२. वर्द्धमान रास	कवि नवलसार	
३. महावीरनो रास	पदम कवि	सं. १६०९
४. वर्द्धमान रास	वर्द्धमान कवि	सं. १६६५
५. वर्द्धमान पुराण	नवल राय	सं. १६९१
६. वर्द्धमान चरित्र	केसरी सिंह	सं. १६९१
७. वर्द्धमान सुवनिक्का	कवि बुद्ध जी	
८. महावीर पुराण	मनसुख सागर	
९. महावीर री विनती	भट्टारक शुभचन्द	
१०. महावीर छंद	भट्टारक शुभचन्द	

आधुनिक साहित्य

आजकल प्रभु महावीर पर भारतीय व विदेशी भाषाओं में इतना साहित्य प्रकाशित हुआ है जितना किसी भारतीय धर्म संस्थापक पर कम ही हुआ हो। हमारे देश की प्रमुख भाषा हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, उर्दू, मराठी, तमिल, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाएं व विदेशी लेखक हैं। उस साहित्य में कुछ चुनींदा ग्रन्थों के नाम हम यहां दे रहे हैं, जिन ग्रन्थों की इस पुस्तक में सहायता ली गई है-

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	समय	भाषा
१.	श्री महावीर स्वामी चरित्र	वकील नन्दलाल लहखुभाई बडेरा	१९२५	गुजराती
२.	महावीर कथा	गोपालदास जीवाभाई	१९४१	गुजराती
३.	भगवान महावीर	चन्द्रराज भण्डारी	१९८१	हिन्दी
४.	श्री महावीर चरित्र	मुनि हर्षचन्द	१९२९	गुजराती
५.	श्री वर्द्धमान चरित्र	स्व. श्री ज्ञानचन्द		हिन्दी
६.	भगवान महावीर का आदर्श जीवन	स्व. श्री चौथमल जी महाराज		हिन्दी
७.	श्रमण भगवान महावीर	मुनि श्री कल्याणविजय जी		हिन्दी
८.	तीर्थंकर वर्द्धमान	श्री श्रीचन्द रामपुरिया		हिन्दी
९.	तीर्थंकर महावीर (१-२)	आचार्य विजयइन्द्रसूरि जी		हिन्दी
१०.	भगवान महावीर एक अनुशीलन	आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी		हिन्दी
११.	आगम और त्रिपिटक एक अनुशीलन	मुनि श्री नगराज		हिन्दी
१२.	जैनधर्म का मौलिक इतिहास	आचार्य श्री हस्तीमल जी		हिन्दी
१३.	जैनधर्म का मौलिक इतिहास	पं. बलभद्र		हिन्दी
१४.	सन्मति महावीर	श्री सुरेश मुनि शास्त्री		हिन्दी

१५. भगवान महावीर	रवीन्द्र जैन, पुरुषोत्तम जैन		पंजाबी
१६. महावीर सिद्धान्त और उपदेश	उपाध्याय श्री अमर मुनि अनुवादक- रवीन्द्र जैन		पंजाबी
१७. विश्व ज्योति महावीर	उपाध्याय श्री अमर मुनि		हिन्दी
१८. चार तीर्थकर	पं. सुखलाल जी संघवी		हिन्दी
१९. भगवान महावीर	श्री काशीराम चावला	१९४६	उर्दू
२०. महावीर वाणी	पं. बेचरदास दोशी		हिन्दी
२१. वैशाली के राजकुमार तीर्थकर वर्द्धमान महावीर	डा. नेमिचन्द्र		हिन्दी
२२. काल्पनिक अध्यात्म महावीर	आचार्य बुद्धिसागर		हिन्दी
२३. भगवान महावीर	मुनि श्री रत्नविजय		अंग्रेजी
२४. क्या वर्द्धमान विवाहित थे?	पं. हीरालाल दुग्गड़		हिन्दी
२५. भगवान महावीर	श्री कामताप्रसाद जैन		हिन्दी
२६. निर्गन्ध भगवान महावीर	जय भिक्खु		हिन्दी
२७. युग पुरुष महावीर	शरदकुमार साधक		हिन्दी
२८. जगद्धारक भगवान महावीर	अम्बालाल नरायण जोशी		हिन्दी
२९. भगवान महावीर	डा. शोभानाथ पाठक		हिन्दी
३०. कुण्डलपुरकेराजकुमार महावीर	जयप्रकाश शर्मा		हिन्दी
३१. प्रभु महावीर नुं. जीवन चरित्र	मुनि अम्बाविजय		गुजराती
३२. वर्द्धमान (महाकाव्य)	अनूप कवि		हिन्दी
३३. वीरायण (महाकाव्य)			हिन्दी
३४. भगवान महावीर चित्र संपुट	मुनि यशोविजय जी	हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी	
३५. Secred Book of East	Dr. Herman Jacobi		English
३६. ज्ञातपुत्र श्रमण भगवान महावीर	हीरालाल रसिकदास कापड़िया		गुजराती
३७. त्रिशलानन्दन महावीर	रतिलाल शाह		गुजराती
३८. श्रमण भगवान महावीर नुं जीवन	मुनि श्री भद्रकर विजय जी		गुजराती
३९. महावीर वर्धमान	डा. जगदीशचन्द्र जैन		हिन्दी
४०. पुरुषोत्तम महावीर	युवाचार्य महाप्रज्ञ		हिन्दी
४१. महावीर का अर्थशास्त्र	युवाचार्य महाप्रज्ञ		हिन्दी
४२. तीर्थकर महावीर	संपादक: श्रीचन्द्र सुराना सरस		हिन्दी

हमने यहां उन ग्रंथों का वर्णन किया है जिन्हें हमने पढ़ा या जिनके विषय में हमें जानकारी प्राप्त हुई है और उनकी सहायता से कुछ शब्द लिख पाए। प्रभु महावीर पर अनगिनत ग्रन्थ अभी अप्रकाशित अवस्था में भण्डारों की शोभा बने हुए हैं।

यह बड़ी विडम्बना रही है कि जिस युग पुरुष ने संसार को इतना कुछ दिया, उस युग पुरुष का

नाम किसी भी वैदिक ग्रन्थ में नहीं पाया जाता। दूसरी ओर प्रथम तीर्थंकर का वर्णन वेद, उपनिषद्, पुराण साहित्य में भरा पड़ा है। इसका एक ही कारण हमारी समझ में आता है कि प्रभु महावीर का युग यज्ञों, वेद, ब्राह्मण, पशुबलि, दास-प्रथा, छुआछूत का युग था। प्रभु महावीर ने अपनी अहिंसक क्रांति से इन रूढ़ियों को जड़ से उखाड़ फेंका। उन्होंने वेद और ब्राह्मण दोनों का प्रभुत्व अस्वीकार कर ब्राह्मणों द्वारा बनाई वर्ण व्यवस्था को जड़ से समाप्त कर दिया। धर्म के नाम पर यज्ञों में पशुबलि को कुकृत्य बताया। जाति का आधार कर्म को माना, जन्म को नहीं। स्त्री और दासों की मण्डियां बन्द करवाईं। उन्हें अपने धर्म-संघ में बराबर का स्थान दिया। भगवान महावीर और भगवान बुद्ध के कारण ब्राह्मणवाद ५०० वर्ष तक पनप न सका। क्योंकि प्रभु महावीर के समय के राजा भी इन्हीं धर्मों को मानने वाले थे।

प्रभु महावीर और वेद

प्रभु महावीर ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान नहीं माना। ईश्वर को जगत् का कर्ता नहीं माना। उन्होंने तो मुक्त आत्मा को परमात्मा माना। ब्राह्मण समाज इस विरोध को सहन न कर सका। उन्होंने जैनों को नास्तिकों की संज्ञा में रखते हुए कहा- “नास्तिको वेद निन्दकः।”

वेद का निन्दक नास्तिक है। स्मृतिकार ने नास्तिक की परिभाषा ही बदल डाली। प्रभु महावीर को ब्राह्मण धर्म ने न पहले स्थान दिया न अब दिया है। हां, समय आया, जब जैनों से सत्ता छिन गई तो एक ब्राह्मण सेनापति पुष्य मित्र ने जैनधर्म पर इतने जुल्म किए कि उन्हें बिहार, उड़ीसा, बंगाल से पलायन कर राजस्थान, गुजरात व दक्षिण भारत आना पड़ा। जैनों के पवित्र स्थल समाप्त कर दिए। उड़ीसा के राजा खारवेल ने जैनधर्म को सारे भारत तक फैलाया था। वहां भी यह इतिहास की बात बन गया।

दक्षिण भारत में जैनों पर अत्याचार

गुप्त काल शक्ति से बीता। चाहे उस समय के राजा ब्राह्मण धर्म को मानने वाले थे फिर भी दूसरे को सम्मान देते थे। फिर कुमारिल भट्ट, शंकराचार्य, मण्डन मिश्र ने राजाओं को प्रेरित कर जैनधर्म पर अनेक प्रतिबंध लगवाए। दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म के समय शैवों ने यह क्रम चालू रखा। दक्षिण भारत के राज्यों में जैनों की संख्या करोड़ों में थी। इस संदर्भ में गजराज रावैर कृत ‘जैनधर्म में मौलिक इतिहास’ भाग ४ क पृष्ठ ४५ पर लिखा है- “तिरुअप्पर और ज्ञान सम्बन्धर इन दोनों के समकालीन शैव सन्तों ने एकेश्वरवाद के सिद्धान्त का प्रचार किया।”

“तिरुअप्पर पहले जैन साधु थे फिर शैव बने। पूर्व व्यापक प्रभाव के कारण उन्हें राज्याश्रय मिला। तिरु ज्ञान सम्बन्धर को मधुरापति पाण्डव राज सुन्दर पाण्डव ने समर्थन दिया। उसका दूसरा नाम कुब्ज पाण्डव था उसने जैनधर्म का परित्याग कर दिया। इसी समय तिरुअप्पर नामक, जो पहले धर्मसेन नामक जैन आचार्य था, वह शैवों से चर्चा में हार गया। उसके प्रभाव से कांचीपति पल्लवराज महेन्द्र बदले। प्रथम (६००-६३०) में जैनधर्म त्याग शैव बन गया।”

आगे वह पृष्ठ 54 पर लिखते हैं- “दक्षिणापथ के तमिलनाडु प्रदेश में ईसा की सातवीं शताब्दी के प्रथम दशक में शैवों द्वारा प्रारंभ किए गए रक्तपातपूर्ण शैव अभियान में जैनों पर सामूहिक संहार, बलात् धर्म परिवर्तन, सर्वस्वापहरण आदि के रूप में जो अत्याचार किए गए, दक्षिणापथ से जैन धर्म के अस्तित्व तक को समाप्त कर देने के जो प्रबल प्रयास किए गए, उन प्रयासों के सफल होने की पृष्ठभूमि में दक्षिण के उस समय के जैनों की इस प्रकार की भीरुता, क्लैव्यता, आततायियों के अत्याचार,

अनाचार को मूक भेड़-बकरी तुल्य बिलबिलाते हुए सहन कर लेने, दैन्य, पलायनपरक वृत्ति वस्तुतः सबसे बड़ा कारण रही, यह एक कटुतम सत्य है। इसके विपरीत कर्नाटक प्रदेश के कोल्हार राज्य में उस समय शक्तिशाली गंगवंशी राजाओं का राज्य था। वह राजवंश जैन धर्मावलम्बी था। उस समय तक कर्नाटक प्रदेश के जैन धर्मावलंबियों के हृदय पर गंग राजवंश के संस्थापक क्राणूर गण (ग्रामणीय संघ) के आचार्य सिंहनन्दी की सात शिक्षाओं का पर्याप्त प्रभाव था। उन सात शिक्षाओं में से छठी शिक्षा इस प्रकार थी-यदि तुम लोग अथवा तुम्हारे वंशज रणांगण में पीठ दिखा कर पलायन कर देंगे तो तुम्हारा राज्य नष्ट हो जाएगा। इस शिक्षा का सीधा-सा अर्थ यही है कि आततायियों को मूलतः नष्ट करने के लिए रणांगण में डटे रहो, मर मिटो पर अत्याचारी के समक्ष मत झुको। जैनों के इसी शौर्यशाली संकल्प के कारण शैव अभियान तमिलनाडु से कर्नाटक की ओर नहीं बढ़ सका। ईस्वी सन् 640 से 670 के बीच की अवधि में गंग राजवंश के ग्यारहवें राजा भूविक्रमश्रीवल्लभ भूरिविक्रम ने कांची का पल्लवराज पर आक्रमण किया और उसे युद्ध में परास्त कर उसके सम्पूर्ण कांची राज्य पर अधिकार भी कर लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि पल्लवराज का पृष्ठबल पाकर जब शैवों ने जैनों पर जब और अधिक घोर अत्याचार प्रारंभ कर दिए, उस संभवतः जैन धर्मावलंबियों की रक्षा के लिए गंगराज भूविक्रम ने अत्याचारी पल्लवराज को परास्त कर कांची के राज सिंहासन पर अधिकार किया होगा।”

शैवों द्वारा जैनों पर किए गए अत्याचार की साक्षी देने वाले पौरियपुराण, मदुरा के मीनाक्षी मन्दिर के चित्र काफी हैं। इस तरह तमिलनाडू से जैनधर्म समाप्त हो गया। फिर आन्ध्र प्रदेश में लिंगायत सम्प्रदाय ने आग में तेल का काम किया। रामानुज आचार्य ने (१२सदी) में अपने अभियान में जैनों का धर्म परिवर्तन करवाया। इन जुल्मों के दो ही कारण थे- जैनों को राज्याश्रय न मिलना तथा जैन संघों में फूट। मुस्लिम हमला कर पहले गुजरात के समुद्री तट, फिर कंधार के खुस्क मार्ग से जैनधर्म को नुकसान पहुंचाते रहे।

हिन्दू या ब्राह्मण

साहित्य में तो श्रमण व ब्राह्मण शब्द ही उपलब्ध होते हैं। ईरानी ने सबसे पहले सिन्धु के किनारे रहने वालों को 'हिन्दू' कहा। फिर मुस्लिम ने इसी नाम से पुकारा। मुगल काल में इस देश को हिन्दुस्तान कहते थे। आज ब्राह्मण स्वयं को हिन्दू मानकर जैनधर्म, सिक्ख, बौद्ध को इसकी शाखा कहते हैं। पर न तो भारतीय संविधान की धारा में ऐसा वर्णन है और न ही हिन्दू साहित्य उनकी बात को स्वीकार करने को तैयार है। हिन्दू शब्द भौगोलिक शब्द है किसी धर्म का प्रतीक नहीं। १९४७ में हिन्दुस्तान दो भागों में बंट गया भारत व पाकिस्तान। इस दृष्टि से यहां का हर नागरिक भारतीय है धार्मिक दृष्टि हिन्दू नहीं। अगर ऐसा हो तो जैन और अन्य धर्म का अन्तर स्पष्ट न हो। जैन किसी भी दृष्टि ने हिन्दू धर्म का अंग नहीं। जैनों का अपना साहित्य, तीर्थंकर, सिद्धान्त व तीर्थस्थान हैं।

बौद्ध साहित्य में भगवान महावीर

अगर ब्राह्मणों ने प्रभु महावीर को २६०० साल तक महत्व नहीं दिया, तो भी सत्य समाप्त न हो सका। बौद्ध ग्रन्थों में प्रभु महावीर का ५१ बार वर्णन उपलब्ध होता है। यह बात दूसरी है यहां प्रभु महावीर बुद्ध के विरोध में हैं। आचार्य मुनि श्री नगराज जी ने अपने ग्रन्थ 'आगम और त्रिपिटक' भाग १ में इसका अच्छा संकलन किया है। डा. भागवन्द जैन ने भी इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। इन

५१ प्रसंगों में ३२ तो मूल त्रिपिटकों के हैं। मज्झिम निकाय के दस हैं, दीर्घनिकाय के चार हैं, अंगुत्तर निकाय व संयुक्त निकाय के सात-सात हैं। सुत्तनिपात में दो और विनयपिटक में दो उल्लेख हैं। इन उल्लेखों में अनेकों विषयों पर बुद्ध और निर्गन्थों की बनाई चर्चाओं, घटनाओं का उल्लेख है।

बौद्ध ग्रन्थों से प्रभु पार्श्वनाथ की चातुर्याम परम्परा पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। प्रभु महावीर का नाम निर्गन्थ ज्ञातपुत्र आया है जो उनका गुण निष्पन्न नाम है। निर्गन्थ जैनधर्मज्ञ का प्राचीन नाम है। ज्ञात वंश के सपूत होने के कारण वह ज्ञातपुत्र कहलाए। ज्ञात लिच्छवियों की श्रेणी थी जिसके प्रमुख राजा सिद्धार्थ थे। उनकी माता त्रिशला चेटकराज की बहन थीं।

बौद्ध साहित्य में कई स्थानों पर निर्गन्थों की तपस्या, कर्मवाद की चर्चा है। अनेक जैन पारिभाषिक शब्द आए हैं।

इस तरह बौद्ध साहित्य में हमें एक नहीं दो तीर्थकरों की परम्परा का अच्छा ज्ञान होता है। महात्मा बुद्ध के चाचा वप्प भी निर्गन्थ थे। एक मान्यता के अनुसार भगवान बुद्ध भी कुछ समय जैन मुनियों के शिष्य रहे। अगर बौद्ध ग्रन्थ न होते तो प्रभु महावीर के सारे जीवन का प्रमाण देना मुश्किल था। क्योंकि कुछ पारिभाषिक शब्दों की एकता के कारण कुछ विदेशी लेखकों ने प्रभु महावीर और बुद्ध को एक माना। किसी ने जैनधर्म को बौद्ध धर्म की शाखा माना। पर त्रिपिटक साहित्य ने एक क्षण में सारी समस्या हल कर दी। इतना सब कुछ होते हुए भी भगवान महावीर के बारे में, जैन मान्यता क्षीण नहीं हुई। जैन आचार्य प्रभु महावीर का जीवन उनके जीवनकाल व जैनधर्म में अब तक लिखते आए हैं।

भारतीय साहित्य के सिर्फ बौद्ध साहित्य में प्रभु महावीर का वर्णन मिलता है। जैनधर्म का वर्णन, प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव की परम्परा उनके धर्म का वर्णन वेद, पुराण, उपनिषद् साहित्य में श्रमणों के अन्तर्गत आया है। बुद्ध का वर्णन तो मात्र पुराणों में है, वेदों में नहीं। हालांकि बुद्ध साहित्य में प्रभु महावीर को महात्मा बुद्ध के प्रतिद्वन्दी के रूप में चित्रित किया गया है। पर जैनधर्म का इतिहास संघर्षों का इतिहास रहा है। जैनों को मात्र ब्राह्मणों से ही नहीं, बौद्धों से भी संघर्ष करना पड़ा। अकलंक व आचार्य हरिभद्र की कथा इस बात का प्रमाण है कि जैनों को बौद्धों ने भी कष्ट दिए।

इन सब बातों के विपरीत एक भी ऐसा उदाहरण उपलब्ध नहीं, जब किसी जैन राजा ने किसी अन्य धर्म पर जुल्म ढाया हो। जैन हमेशा देशभक्त लोग रहे हैं। मौर्य युग हो या नन्द साम्राज्य, खारवेल हो या कुमारपाल, सभी राजाओं ने जैनधर्म के साथ अन्य धर्मों को पूर्ण राजकीय संरक्षण दिया। कुमारपाल ने सोमनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया। जैन मंत्रियों ने जैन मन्दिरों के अतिरिक्त हिन्दू मन्दिर व मस्जिदों के निर्माण में सहयोग दिया। आज भी जब विश्वबंधुता व अहिंसा की बात होती है तो जैनधर्म का कार्य सबसे आगे है। अहिंसा का सम्बन्ध जितना महावीरसे है उतना किसी महापुरुष से नहीं। जैनधर्म के बारे में अन्य मिथ्यालाप मिलते हैं जिन्हें हमारी पाठ्य पुस्तकों में डाल दिया गया है जिन्हें हमारे छोटे बच्चे पढ़ते हैं। जैन समाज इस जन्म शताब्दी के २६००वर्ष पर इस बात पर ध्यान देने की परमावश्यकता है कि जैनों की स्वतन्त्र सत्ता, इतिहास, संस्कृति, सभ्यता के बारे में अधिक से अधिक लोगों को परिचय कराया जाए। जैनों को जैनत्व के रूप में परिचय कराना होगा। नहीं तो जैन, बौद्ध की तरह इतिहास की बात रह जाएंगे। परम्पराएं ऐसे ही समाप्त होती हैं पर जैनों पर जुल्म आज भी जारी है। कोई भी सत्ताधारी हो कोई न कोई घटना घटित हो जाती है। आज भी जैन मन्दिरों के निर्माण में रुकावट डाली जा रही है, जैनधर्म को मिटाने का दृढ़ प्रयत्न जारी है।

१८८१ से अब तक जैन अल्पसहायक समाज रहा है पर अभी भी जैनधर्म को न तो स्वतंत्र धर्म माना गया है ना ही अल्पसंख्यक आयोग में स्थान दिया गया है। ब्राह्मण समाज फांसीवादी परम्परा को आगे बढ़ाए हुए हैं। पर इन बातों के लिए जैनों की अज्ञानता भी प्रमुख दोषी है उनकी ना कोई राजनैतिक विचारधारा है न अन्त। मंच के बिना सरकार कोई बात समझाई नहीं जा सकती है न परम्परा की रक्षा की जा सकती है।

विवाह के विषय में दिगम्बर मान्यता

प्रसिद्ध जैन विद्वान पं. वलभद्र जैन के जैनधर्म के मौलिक इतिहास भाग-२ में इस प्रकार लिखा है। हमने पुस्तक के पृष्ठ ५२ पर जो लिखा है उसके प्रकाशन में त्रुटियां रह गई हैं। लाईन १६ पर श्वेताम्बर के स्थान पर दिगम्बर पढ़ा जाए। राजा जितशत्रु को प्रभु का फूफा हमने पं. वलभद्र जैन की पुस्तक जैनधर्म का मौलिक इतिहास को आधार मानकर लिखा है। श्वेताम्बर साहित्य इस रिश्ते का उल्लेख नहीं ये बात हम अपने विद्वानों पर छोड़ते हैं। पाठकों से अनुरोध है कि यह पृष्ठ को शुद्ध करके पढ़ें।

“भगवान महावीर का बाल्य जीवन उत्तरोत्तर युवावस्था में परिणत होता गया। इस अवस्था में भी उनका चित्त भोगों की ओर नहीं था। यद्यपि उन्हें भोग और उपभोग की वस्तुओं की कमी नहीं थी, किन्तु उनके अन्तर्मानस में उनके प्रति कोई आकर्षण नहीं था। वे जल में कमलवत् उनसे निस्पृह रहते थे। वे उस काल में होने वाली विषम परिस्थिति से परिचित थे। राज्यकार्य में भी उनका मन नहीं लगता था। राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशला उन्हें गृहस्थ मार्गको अपनाने की प्रेरणा करते थे और चाहते थे कि वर्द्धमान का चित्त किसी तरह राज्य कार्य के संचालन की ओर हो। एक दिन राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशला ने महावीर को वैवाहिक सम्बन्ध करने के लिए प्रेरित किया। कलिंग देश का राजा जितशत्रु, जिनके साथ राजा सिद्धार्थ की छोटी बहन यशोदा का विवाह हुआ था, अपनी पुत्री यशोदया के साथ कुमार वर्द्धमान का विवाह सम्बन्ध करना चाहता था। परन्तु कुमार वर्द्धमान ने इसे स्वीकार नहीं किया।” पं. वलभद्र जैन ने यह प्रमाण कहां से लिखा है, इसका वर्णन उन्होंने नहीं किया।

कुछ तथ्य

हमने इसके लिए गणि श्री कल्याणविजय जी महाराज व आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का अनुकरण किया है। दोनों महापुरुषों ने भगवान महावीर के जीवन के हर पहलू को छुआ है। गणि कल्याणविजय तो स्वयं उन स्थानों पर गए हैं, जहां प्रभु महावीर पधारे थे। वह इस सदी के प्रमुख जैन इतिहासकार हैं। उन्होंने आगमों के आधार पर प्रभु महावीर के विहार क्षेत्र को तय किया है जिसे सभी विद्वानों ने मान्य किया है।

आचार्य देवेन्द्र मुनि जी की कृति महावीर का जीवन-चरित्र का एक शोध प्रबन्ध है। उन्होंने सभी लिखित जीवन-चरित्र ग्रन्थों को सामने रखकर हर बात लिखी है। आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी की पुस्तक **भगवान महावीर: एक अनुशीलन** हमारे लिए आधार भूत बनी है।

हमारा प्रयास रहा है कि प्रस्तुत पुस्तक में श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यताओं का उल्लेख कर दिया जाए। प्रभु महावीर का जीवन-चरित्र विभिन्न समय पर विभिन्न आचार्यों व विद्वानों ने भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रकाशित किया है। उन सबका वर्णन यहां इसलिए करना जरूरी है कि हमने इन ग्रन्थों का आधार इस पुस्तक में लिया गया है-

प्रभु महावीर के जीवन स्रोत का विवरण हमें इन ग्रन्थों से उपलब्ध है जिनका विवरण इस प्रकार है-

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	रचयिता	समय	भाषा
१.	आचारांगसूत्र, श्रुतस्कंध-प्रथम द्वितीय	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
२.	सूत्रकृतांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
३.	स्थानांग आर्य	सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
४.	समवायांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
५.	भगवतीसूत्र	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
६.	ज्ञाताधर्मकथांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
७.	उपासकदशांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
८.	अन्तकृद्दशांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
९.	अनुत्तरोपपातिक	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१०.	विपाक	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
११.	औपपातिक	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१२.	निरयावलिका	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१३.	राजप्रश्नीय	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१४.	कल्पावतंसिका	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१५.	पुष्पिका	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१६.	उत्तराध्ययन	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत

इन सभी ग्रन्थों का संकलन भगवान महावीर के समय उनके पांचवें गणधर आर्य सुधर्मा ने किया था। इनमें प्रभु महावीर के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन आ गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ

हमारा लेखन क्षेत्र मूलतः पंजाबी भाषा रहा है। जिनशासन प्रभाविका, जैनज्योति उपप्रवर्तिनी साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की प्रेरणा से ५० के करीब छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें आगमों के अनुवाद, कथा साहित्य, स्तोत्र साहित्य, इतिहास व पुरातत्व पर पुस्तकें शामिल हैं। महासाध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी की सतप्रेरणा और आशीर्वाद का फल है कि उनका साहित्य सारे संसार में पहुंच रहा है। उनकी रूग्नावस्था के कारण उनके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाना श्रीसंघ का कर्तव्य है। हमारा जीवन उनके उपकारों की कहानी है। उनकी प्रेरणा से हम पंजाबी में प्रथम बार जैन साहित्य लिख सके। किसी जैन साध्वी को भारत के राष्ट्रपति ने जैन ज्योति पद दिया। पंजाबी विश्वविद्यालय ने “आचार्य आत्माराम जैन भाषणमाला” में भाषण करने का निमन्त्रण दिया। उन्हें पद से अलंकृत किया। उनका ५०वां दीक्षा महोत्सव पद उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। यही नहीं प्रभु महावीर का २५०० साला निर्वाण महोत्सव उन्हीं की प्रेरणा व दिशा-निर्देश में मनाया गया। सरकारी समिति की वह विशिष्ट अतिथि बनीं। उनका जीवन हर साधु-साध्वी के लिए प्रेरणा स्रोत है।

हमारी गुरुणी ज्ञान का भण्डार थीं। इतना सब पाकर भी उन्हें अहं छू नहीं गया। उनके उपकारों को भुलाना असम्भव है। वह प्रवर्तिनी महासती श्री पार्वती जी महाराज की शिष्यानुशिष्या हैं। प्रवर्तिनी जी हिन्दी की प्रथम जैन महिला लेखिका थीं। उनके सम्मान में आपने इण्टरनेशनल पार्वती जैन अवार्ड स्थापित करवाया। हमारे हर कार्य में उनका स्नेह व आशीर्वाद रहता था। वह भक्तों को हर कष्ट से उबारती थीं। साध्वी सुधा जी व साध्वी राजकुमारी उनकी दो प्रमुख शिष्या हैं। उनके परिवार में ४० के करीब साध्वियां हैं जो सभी सम्पन्न परिवारों से सम्बन्धित हैं। सांसारिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण हैं। साध्वी किरण जी, साध्वी संतोष जी, डा. स्मृति जी का पूर्ण सहयोग रहा है। साध्वी डा. स्मृति जी बहुत ही प्रतिभाशालिनी साध्वी हैं। वे अध्ययनशील हैं। इस पुस्तक की पांडुलिपि का निरीक्षण, संपादन व संशोधन उन्होंने अत्यधिक श्रम से किया है। सभी साध्वी गुरुणी की सेवा समर्पणभाव से करती हैं। आप सम्प्रदाय, भाषा, जाति के भेद से दूर हैं। आपके गुणों की झलक आपके शिष्या परिवार पर भी देखने को मिलती है। इस पुस्तक में भगवान महावीर जीवन से सम्बन्धित अनेक रंगीन चित्र हमें उ.भा. प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के विद्वान शिष्यरत्न उपप्रवर्तक श्री अमरमुनि जी के सचित्र कल्पसूत्र से प्राप्त हुए हैं। श्री अमर मुनि जी महाराज की इस उदारता व कला के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञ हैं।

प्रेरिका महाश्रमणी ज्ञानप्रज्ञा साध्वी सुधा जी महाराज

आप साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की प्रमुख शिष्या हैं। साध्वी राजकुमारी जी के बाद आपका स्थान है। आपका जन्म पट्टी में सम्पन्न जैन परिवार में हुआ था। बी.ए. तक आपने शिक्षा ग्रहण की। आप बहुभाषाविद्, विनम्र प्रवचन भूषण, शास्त्रों के रहस्यों की ज्ञाता साध्वी हैं। सांसारिक दृष्टि से आप महासाध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी की भानजी हैं। आप सभी कामों को सहज ढंग से कर डालती हैं।

हमारे जीवन पर आपके अथाह उपकार हैं। गुरुणी जी की हर बात का फैसला लेने का अधिकार आपका है। आप धर्म-प्रचार में प्रेरणा देती रहती हैं। पंजाबी साहित्य की सतत धारा को आप प्रज्वलित रखती हैं। गुरुणी जी के भक्तों को धर्म कार्यों की प्रेरणा देती रहती हैं।

कई वर्षों से आपका आग्रह था कि पंजाबी साहित्य पंजाब तक सीमित है। हमें एक सर्वमान्य प्रभु महावीर का जीवन चरित्र तैयार करना चाहिए। उनकी बलवती प्रेरणा इस वर्ष रंग लाई।

सौभाग्य से अगला वर्ष प्रभु महावीर के जन्म-कल्याणक के २६०० वर्ष समाप्त होगा। उस अवसर पर हिन्दी भाषा में हमारा यह छोटा प्रयास है। इसके लिए हम पुनः स्व. आचार्य देवेन्द्र मुनि जी महाराज व गणि कल्याणविजय जी महाराज को पुनः प्रणाम करते हैं जिनके ग्रन्थों के कारण हम इस कार्य को सहजता से कर पाए। हम उन सभी ग्रन्थों व प्रकाशकों के आभारी हैं, जिनके ग्रन्थों की हमारे द्वारा सहायता ली गई है। हम श्रमणसंघ के चतुर्थ आचार्य डा. शिव मुनि के आभारी हैं कि उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया। साथ ही मुनि श्री जयचन्द्र जी महाराज व वीरेन्द्र मुनि के सुझावों के लिए आभार प्रकट करते हैं।

यह ग्रन्थ सचित्र है। इन सभी चित्रों के लिए आप इस ग्रन्थ के व्यवस्थापक जैन जगत् के प्रसिद्ध विद्वान, भाई श्री श्रीचन्द्र जी सुराना के आभारी हैं, जिनकी कृपा से हमें चित्र मिले। जिनका सहयोग इस प्रकाशन में काम आया। भाई राजेश जी इस ग्रन्थ के प्रकाशक हैं उनका सहयोग भी किसी से कम

नहीं। हम समस्त सुराना परिवार व प्रकाशन विभाग के कर्मचारियों के अभारी हैं जिन्होंने भाषा व लिपि की कठिनाईयों को झेला और श्रमपूर्वक शुद्ध मुद्रण कराया।

सबसे बढ़कर हम दानी सज्जनों के अभारी हैं जिन्होंने गुरु-भक्ति व प्रभु-भक्ति का प्रमाण देते हुए अपने द्रव्य का सदुपयोग किया।

हम दोनों (रवीन्द्र व पुरुषोत्तम) प्रेरिका व समस्त साध्वी परिवार इस ग्रन्थ को जिनशासन प्रभाविका, जैन ज्योति, महाश्रमणी जैन पंजाबी साहित्य की प्रथम प्रेरिका, लेखिका, शास्त्र मर्मज्ञ गुरुणी, उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज के कर-कमलों में भेंट करते हैं। प्रभु महावीर के २६०० साला जन्म दिन पर हमारी भेंट स्वीकार करें।

विद्वत जनों से प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ के लेखन प्रकाशन में बहुत-सी त्रुटियां रह जाना स्वाभाविक है। विचार भेद कोई रह सकता है जिसके कारण किसी की मान्यता परम्परा को आघात पहुंचा हो, तो हम मन, वचन, काया से प्रभु महावीर की साझी से क्षमा मांगते हैं।

हमारा हिन्दी भाषा में प्रथम प्रयत्न है। विद्वत् जन इस ग्रन्थ में अच्छी बात ग्रहण करें। जो त्रुटियां हों, वह हमारी झोली में डाल दें। लाइब्रेरी की पुस्तकों के लिए आचार्य विमल मुनि जी महाराज, साध्वी डा. साधना जी महाराज व आचार्य नित्यानंद जी महाराज का आशीर्वाद व सहयोग हमें मिलता रहा है। इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

एक बार पुनः इस ग्रन्थ की आशीर्वादिका साध्वी राजकुमारी जी महाराज, प्रेरिका साध्वी सुधा जी महाराज तथा संपादिका डा. स्मृति जी महाराज का आभार प्रकट करते हैं। जिन विद्वानों ने सुझाव दिए उनके भी आभारी हैं। वह सब साधुवाद व धन्यवाद के पात्र हैं।

पाठकों एवं श्रद्धालुओं की बहुत देर से मांग चली आ रही थी कि इस पुस्तक का पुनः प्रकाशन होना चाहिए। इसी मांग की आपूर्ति के लिए महाश्रमणी, शासन ज्योति श्रीसुधा जी महाराज के जन्म दिवस के शुभावसर पर इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

द्वितीय संस्करण की भूमिका

इस ग्रन्थ का प्रथम प्रकाशन भगवान महावीर के २६०० साला जन्म कल्याण के अवसर पर हुआ था। इसका विमोचन यूनेस्को द्वारा आयोजित हिन्दी सम्मेलन में सम्पन्न हुआ। जिस समय यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ, उस समय हमारी श्रद्धेय गुरुणी उपप्रवर्तिनी, संधारा साधिका, साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज रुग्ण अवस्था में थीं। हर्ष का विषय है कि हम उन्हें इस ग्रंथ का प्रथम संस्करण भेंट कर सके। अब इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण उनके देवलोक गमन के पश्चात उनकी सुशिष्या महाश्रमणी, जैन शासन प्रभाविका, सरलात्मा गुरुणी साध्वी श्री सुधा जी की प्रेरणा से हो रहा है। प्रथम संस्करण की प्रेरिका भी वही थीं। इस संस्करण में हमने कुछ सुधार किए हैं। कुछ घटनाओं का उल्लेख इस संस्करण में दर्ज किया है। ध्यान रखा है कि श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों द्वारा मान्य भगवान महावीर से संबंधित सभी घटनाओं का वर्णन इसमें समाहित हो जाए।

इस ग्रंथ का कुशल संपादन गुरुणी सुधा जी की सुशिष्या, महान विदुषी, साध्वी डा. स्मृति जी महाराज ने किया है। उन्होंने दिन-रात एक करके अंश को योग्य स्थान पर रखने की चेष्टा की है। हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी उनका सहयोग बना रहेगा।

इस ग्रंथ के प्रथम संस्करण पर बहुत से विद्वान मुनियों, आचार्यों व साधवियों की प्रतिक्रिया हमें

प्राप्त हुई। हम उन सबके आभारी हैं। विशेष रूप से श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य डा. शिव मुनि जी महाराज व आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सुशिष्य श्री जय चंद जी महाराज का उनके आशीर्वाद के लिए आभार प्रकट करते हैं।

हम आभारी हैं प्रसिद्ध वैबसाइट जैन वर्ल्ड यू.एस.ए. के प्रधान डा. श्री विनोद दरियापुरकर अटलांटा व मैडम एलिजाबेथ ल्यूमैन के इस पुस्तक के लिए भेजे शुभकामना संदेश के लिए आभारी हैं। साथ में इस वैबसाइट के संचालक श्री सुनील देशमणि शोलापुर के सहयोग के लिए भी आभार व्यक्त करते हैं।

हम इस ग्रंथ के मुद्रक का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने हर समय हमें सहयोग ही नहीं दिया बल्कि अपने कीमती सुझाव भी इस ग्रंथ के लिए दिए।

हम दानी सज्जनों का भी विशेष आभार प्रकट करते हैं, जिनके सहयोग के कारण यह ग्रंथ पुनः मुद्रित हो सका।

हर्ष का विषय है कि इस ग्रंथ का पुनः मुद्रण महाश्रमणी, शासन प्रभाविका, सरलात्मा श्री सुधा जी महाराज के जन्म दिवस पर हो रहा है। हम उनके जन्म दिवस पर जहां शासन देन से उनकी दीर्घायु की कामना करते हैं वहां उन्हें यह ग्रंथ भेंट करते हुए प्रसन्नता अनुभव कर रहे हैं।

दिनांक : 5 जुलाई, 2009
जैन भवन, मालेरकोटला

शुभचिन्तक
पुरुषोत्तम जैन, रविन्द्र जैन



प्रस्तुत पुस्तक की घेरिका
दिव्य विभूति श्री सुधा जी महाराज

- प्रवचन प्रभाविका साध्वी श्री किरण जी म,



महान् कार्यो को करने की सद्प्रेरणा महामानवों की अन्तःस्थली से स्वतः अद्भुत होती है। वर्तमान युग में वर्धमान महावीर की जीवनी को जन-जन तक पहुंचाने का सुकार्य यद्यपि बहुत समय से हमारे मन में तरंगित था तथापि इस महान् कार्य को प्रेरणा मिली है- दिव्य विभूति महासती श्री सुधा जी महाराज से। स्वर्णमय नक्षत्र-खचित जैन गगन का आप एक विलक्षण नक्षत्र हैं, ध्रुवतारा हैं, आध्यात्मिक पक्ष से आप उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की सुशिष्या हैं धर्मपुत्री हैं, तो भौतिक पक्ष से उनकी भानजी हैं।

अगस्त माह की प्रथम तिथि को सन् १९४३ में पंजाब राज्य के पट्टी नगर में श्री त्रिलोकचन्द जी एवं श्री कौशल्यादेवी जी के सुगृह में आपका जन्म हुआ। पंजाब की वीर प्रसूता भूमि आन-बान और शान के लिए विश्व विख्यात है, जिसने शूरवीरों, दानवीरों, ऋषि-मुनियों, भक्तजनों जैसे रत्नों को जन्म देकर अपने आपको धन्य किया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरु गोविन्दसिंह जैसे शूरवीरों की कर्मभूमि और नानक जैसे भक्त-शिरोमणि, आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज जैसे महान् सन्तों एवं महान् व्यक्तित्व को जन्म देने वाली महान् यही पंजाब की पावनधरा है। इतिहास की पुनरावृत्ति होती ही है। परम्परा को कायम रखते हुए जैन जगत की जीवन्त ज्योति गुरुणी श्री सुधा जी महाराज ने भी इस अंचल को अपने स्वनाम धन्य जीवन से गौरवान्वित किया। आध्यात्मिकता का वातावरण तो परिवेश से मिला ही किन्तु आचार्य सद्माट् श्री आत्माराम जी महाराज जैसे महान् सन्त की जीवनयात्रा के अन्तिम क्षणों में उनकी अपरिमित सहिष्णुता, वेदन क्षमता देखकर आपके हृदय में वैराग्य के अंकुर फूट पड़े। शनैः-शनैः वैराग्य के नन्हें पौधे को वृक्ष बनने के अनुकूल वातावरण मिलता रहा और जब यह महान् वृक्ष अपनी शीतलछाया से धराधाम के आतप तप्त जनों को छाया देने के लिए आतुर हो उठा तो विवश होकर पारिवारिक जनों को दीक्षा की आज्ञा देनी पड़ी। १४ फरवरी १९६५ के शुभ दिन श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज व श्री हेमचन्द्र जी महाराज के पावन सान्निध्य में आपने हरियाणा प्रदेश के कैथल प्रान्त में सर्वविरति दीक्षा अंगीकार की और तब से उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की द्वितीय शिष्या के रूप में धर्म की प्रभावना अनवरत कर रही हैं।

अहंकार रहित, सरल, संयमपूर्ण आपका जीवन स्वर्ण की तरह अनुपम है। साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज जैसी उच्चकोटि की साध्वी रत्ना के लिए एक सुशिष्या की भांति आपके हृदय में पूर्ण समर्पण व निष्ठा का भाव है। आपके मुखमण्डल पर तेज के साथ करुणा, प्रभाव के साथ निष्ठा, तथा व्यावहारिकता के साथ आध्यात्मिकता का मंजुल समन्वय है। जिस प्रकार नदियों में गंगा, पुष्पों में गुलाब, वृक्षों में चन्दन व नक्षत्रों में चन्द्रमा है। उसी प्रकार स्वर्णमाला की आप समुज्ज्वल मणि है। आपकी वाणी से सद्प्रेरणा पाकर अनेक आत्माओं ने अपनी जीवनधारा को नूतन आधाम दिया है।

तपस्या के क्षेत्र में भी आपके वर्षीतप, अठाई व्रत आदि की तपस्याएं महती उपलब्धियां हैं। भंडारी श्री पद्मचंद्र जी महाराज द्वारा आपको 'प्रदीप्त तपस्विनी' की पदवी से अलंकृत किया गया है। आप जैसी तप-त्याग-संघम समर्पण की प्रतिमा के दीर्घायुत्व व उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं। आपकी प्रेरणा से २४वें तीर्थंकर वर्धमान भगवान महावीर की जीवनी प्रकाशित होने जा रही है यह बहुत ही खुशी का प्रसंग है इसको पढ़ने से जन जीवन को प्रेरणा मिलेगी। इसके लेखक श्री रविन्द्र कुमार जैन और श्री पुरुषोत्तम जैन जिन्होंने अपना कीमती समय निकालकर इस ग्रन्थ को लिखने में पूरा-पूरा जीवन का लाभ लिया। ऐसे ही यह भविष्य में धर्मकार्यों में समय लगाते रहे। एक बार पुनः मैं दिव्य विभूति, इस ग्रन्थ की महान् प्रेरिका प्रदीप्त तपस्विनी गुरुणी श्री सुधा जी महाराज के प्रति शासनेश प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ कि युगों तक आपका मार्गदर्शन हम सबको और समाज को प्राप्त होता रहे। आपकी शक्ति वृद्धिंगत होकर समाज निर्माण की दिशा में लगी रहे और आपके पुनीत आशीर्वाद और जीवनोत्थान व साहित्य रचना की प्रेरणाएं सबको मिले। आपश्री जी की सदैव जय विजय हो। स्वास्थ्य लाभ, वृद्धि निरन्तर होती रहे। मेरी लाख-लाख शुभ कामनाएं।

इसी मंगल कामना, मंगल याचना के साथ-साथ

नमामि तां यस्या मतिः सरला।

नमामि तां यस्या आकृतिः सरला।

नमामि सुधासम अन्तःसन्तोषदायिनीं

यस्या गतिः यस्या जागृतिः सरला।

प्रस्तुत पुस्तक की सम्पादिका डा. स्मृति जी महाराज

- साध्वी पूर्णिमा (एम.ए.)



महापुरुष विश्व की महान विभूति होते हैं जो साधारण मनुष्य की तरह जन्म लेते हैं किन्तु जीवन की यात्रा पर आने के बाद वे विरल और अलौकिक गुणों को अपने जीवन में धारण कर लेते हैं। वे अपने सुख-दुख, हानि-लाभ से ऊपर उठकर मानव मात्र के कल्याण के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देते हैं उनके समर्पण की भावना उन्हें महापुरुषों की श्रेणी में उपस्थित कर देती है। महासाध्वी डा. स्मृति जी महाराज की यही विशेषताएं इन्हें महापुरुष की कोटि में रखती हैं।

महासाध्वी डा. स्मृति जी महाराज का जन्म अम्बाला नगरी में हुआ। अम्बाला वह पावन धरा है जो तपस्वी श्री लाल चंद जी महाराज जैसे तपस्वी संत, आचार्य पूज्य कांशीराम जी महाराज जैसे विद्वदरत्न, उपप्रवर्तक तपस्वी श्री सुदर्शन मुनि जी महाराज जैसे सरल संत एवं उपप्रवर्तिनी संथारा साधिका गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज जैसे तपी-जपी महात्माओं की कर्मभूमि रही है। उसी पुण्य धरा पर 17 मई 1969 ई. को आपका जन्म हुआ। आपके माता-पिता बनने का सौभाग्य मिला पिता श्री तरसेम जैन एवं माता श्रीमती शशि कांता जी को। परिवार में सबसे लघु होने की वजह से माता-पिता, भाई-बहन का नैसर्गिक स्नेह आपको प्राप्त हुआ। कुशाग्र मेधा की धनी इस बालिका ने लौकिक क्षेत्र में हर परीक्षा अब्बल श्रेणी में उत्तीर्ण की। घर में रहते हुए भी हिन्दी में स्नातकोत्तर परीक्षा भी अब्बल रहकर उत्तीर्ण की। इसी दौरान पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण मन के अंदर वैराग्य के बीज पल्लवित एवं पुष्पित हुए। समझदारी एवं प्यार से पारिवारिक जनों को अपने अनुकूल बनाकर 19 फरवरी 1991 को सफीदों मंडी में जैन भगवती दीक्षा अंगीकार की। महाश्रमणी शासन ज्योति गुरुणी श्री सुधा जी महाराज का शिष्यत्व स्वीकार किया।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात जहां आपने आगमों का अध्ययन किया, वहीं संस्कृत में भी स्नातकोत्तर परीक्षा विश्वविद्यालय में प्रथम रहकर उत्तीर्ण की। जिसे आप हमेशा उपप्रवर्तिनी गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की कृपा का प्रसाद मानती हैं जोकि आपकी विनम्रता का प्रतीक है। श्री गुरुणी जी महाराज के मन में आपको डाक्टर के रूप में देखने की प्रबल इच्छा थी। ज्ञान सुपात्र को ही दिया जाता है। आपकी पात्रता को देखते हुए उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकांता जी ने आपको पी.एचडी. के लिए तैयार किया। गुरुणी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज के आशीर्वाद से गुरु भक्त बन्धु युगल श्री पुरुषोत्तम जैन एवं श्री रविन्द्र जैन, प्रथम लेखक पंजाबी जैन साहित्य ने विषय चुना "उपासक दशांग सूत्र"। बस आप ज्ञान प्राप्ति के प्रति सतत सावधान रहने लगे। आगमों के स्वाध्याय के द्वारा समयं गौयम मा पमायए के रहस्य को भलीभांति जानकर भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमादी बन गए। अनेक गुणों के अंकुर आपश्री के जीवन में अंकुरित हो गए।

आपके जीवन को कहीं से झांककर देखो, उसी तरह दिखाई देगा - जिस तरह गंगा का निर्मल

जल किसी भी छोर से पीएं तो मीठा लगेगा, मिश्री को किसी भी कोने से चखो तो मीठी लगेगी, गुलाब के फूल की किसी भी पंखुड़ी को सूंघें तो एक-सी खुशबू आएगी। उसी तरह आपका जीवन सरल एवं मधुर है। आपका सबसे बड़ा गुण है विनम्रता। जिससे आपने अपने जीवन को उन्नत एवं समुच्चल बनाया। जिसके फलस्वरूप आपने दीक्षा के मात्र 3 वर्ष में ही निरयावलिका सूत्र का संपादन किया और 7वें वर्ष में उपप्रवर्तिनी महासाध्वी गुरुणी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज की दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर महाश्रमणी अभिनंदन ग्रंथ जैसे बृहत्काय ग्रंथ का संपादन कार्य सम्पन्न किया। आप स्वाध्याय में विशेष रुचि रखती हैं। बाल एवं युवा वर्ग को पढ़ाने के लिए प्रति क्षण तत्पर रहते हैं। आपको इसी गुण को मध्य नजर रखते हुए जैतों मंडी 2008 के चातुर्मास में श्री संघ ने ज्ञानोद्धारिका की पदवी से अलंकृत किया। विनम्रता के साथ-साथ आप में वाणी की माधुर्यता एवं वाकपटुता का विशेष गुण है जो जन-जन को बरबस ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। समय की पाबंदी का आप विशेष ध्यान रखती हैं। आपका हृदय अत्यंत सुकोमल एवं स्फटिकवत् निर्मल है। कृतज्ञता का गुण आपको उच्च आत्मा के रूप में प्रदर्शित करता है।

आप में जिन शासन की महती प्रभावना की उत्कट अभिलाषा है। वैराग्यावस्था में ही आपने वैराग्य एवं भक्ति प्रधान मुक्तकों की पुस्तिका लिखी और दीक्षा के पश्चात आपने श्री निरयावलिका सूत्र, बड़ी साधु वंदना, पच्चीस बोल एवं विविध विषयों पर प्रश्नोत्तरी संबंधी, मंगलकरणाय पुस्तकों की रचना की। वर्तमान समय में महावीर जीवन चरित्र का महान संपादन कार्य किया जोकि प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय है। प्रस्तुत पुस्तिका 'महावीर जीवन चरित्र' में प्रभु महावीर की जीवन झांकी रोचक एवं सरल ढंग से प्रस्तुत की गई है। प्रस्तुत पुस्तिका की बढ़ती मांग को मद्देनजर रखते हुए इस का द्वितीय संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। सुझा जन इस ग्रंथ का अधिक से अधिक लाभ लेंगे। यही हमारी कामना है।



**AN INTRODUCTION OF WRITERS OF THE BOOK
"SACHITTER BHAGWAN MAHAVIRA"
TWO BROTHERS-IN-FAITH COMMITTED TO LITERARY CAUSE**

- Prof. Dr. Dharam Singh
Former Editor Encyclopedia of Sikhism
Punjabi University, Patiala.

Ravinder Kumar Jain and Purshotam Jain are two brother-in-faith who are known for being premier in producing literature on Jainism in Punjabi. During their long association going back to almost half a century, they have been always in the service of Jain Sadhus and Sadhvis and serving the literary cause by rendering, into Punjabi, their scriptural literature and writing about their religion and history. They have followed entirely different professions-Purshotam is an industrialist dealing in steel industry whereas Ravinder has been in Government Service, recently retiring as Assistant Agriculture Officer. They are known in the Jain world as ascetics in householder's life. I have known them for the last about three decades and am witness to their piety in personal life, ever readiness to serve the Jain Sadhus and Savhvis, and deep commitment to propagate Jain religion and philosophy in Punjabi language.

When I was asked by Ravinder Jain to write a few words on these brothers-in-faith, I felt honoured as well as somewhat diffident. I took it as a matter of great honour and pleasure to acknowledge the contribution made by them to the Jain literature in Punjabi, but hesitation came from the fact that they are the persons already known rather well in the Jain world throughout India. The Jain Sadhus and Sadhvis, from the Acharya to an ordinary ascetic as well the devotees from different sects, acknowledge their selfless service and constructive approach to each and every Jain cause. They need no formal introduction, but I take this opportunity of introducing myself to the Jain world through these about these two 'Brothers' and their works.

Purshotam Jain was born on 10 November 1946 at Dhuri in Sangrur District of the Punjab. His father, Shri Swaroop Chand Jain and mother, Smt. Lakshmi Devi Jain, were persons of religious temperament. Purshotam spent his childhood in an environment saturated with deep faith and commitment, and he enjoyed the company of the holy personages who happened to visit the town and their home. He listened to the discourses of these Sadhus and Sadhvis and tried to live in his life the doctrines explained by them. As a result of these teachings, he imbibed a sense of detachment towards worldly things and became more attached to Lord Mahavira and his message of love and peace. Purshotam was against all sorts of violence and hatred from his childhood days and was more inclined towards peace and harmony and spirituality. He lost no opportunity to be in the company of any Jain ascetic visiting his town or nearabouts. Thus, along with his education in matters spiritual and religious, he continued with his secular education as well, graduating from the Punjab University, Chandigarh, in 1968. His interest in religion and particularly Jain religion encouraged him to take up Religion as an additional subject which he passed from the Punjabi University, Patiala in 1976.

Ravinder Kumar was born on 23 October 1949 at Malerkotla in a family situated in religious lore. His father, Shri Mohan Lal and mother Smt. Bimla Devi, were deeply religious couple. Ravinder Jain spend his childhood in the religious environment and visited along with his parents, many Jain ascetics in and around town. His keen interest in Jain teaching and deep devotion to Jain Sadhus and

Sadhvis have been the high point of his personality. Throughout his life he has remained inclined towards spirituality and selfless service. He graduate from Punjabi University, Patiala, in 1972 and passed Religion as an additional subject, along with Purshotam Jain in 1976.

A Chance encounter between Purshotam and Ravinder on 31 March 1969 at Malerkotla developed into a long-lasting friendship and soon they became brothers-in-faith. They used to visit together various Jain holy persons, listen to their discourses and discuss with them and between themselves the paucity of literature in Punjabi language about the history and philosophy of the Jain faith. Ultimately, they took it upon themselves to prepare books in Punjabi giving fundamental information about the faith. Soon they found in the highly revered and very well known Jain Sadhvi, Swaran Kanta Ji Maharaj, a patron. She not only provided them moral encouragement and inspiration but also secured for them from the community financial assistance for the publication of various projects. Sadhvi Swaran Kanta was an enlightenment soul and very good orator. In fact, it was she who discovered and brought out the literary potential in them. She once delivered the Acharya Atma Ram Memorial Lecture at Punjabi University in them. She once delivered the Acharya Atma Ram Memorial Lecture at the Punjabi University which was widely appreciated. The Mahavira Jain chair at the Punjabi Univeristy acknowledge her contribution and honoured her with the title of Jain Shashan Prabhavika.

Thus, Ravinder Jain and Purshotam Jain, pioneers in producing literature on Jainism in Punjabi, have been selflessly working in the field for the last about thirty years. It will not be inappropriate to say that they are perhaps the only persons to produce books on Jainism in Punjabi language, there is a lot of literature available on Jainism in various other Indian languages, but no one else has so far done any significant work in Punjabi. Most of the Jain scriptural literature has been in Prakrit/Ardh Magadhi, the reason was to produce such literature in the language comprehensible to common man and to falsify the myth that only Sanskrit was capable of expressing metaphysical/spiritual ideas. However, these days even Prakrit/ Ardh Magadhi is not comprehended by a common devotee in Punjabi where people have Punjabi as their mother tongue. During the reign of King Vikramaditya, these scriptures came to be transcribed in Sanskrit when various Jain scholars and savant received patronage, but none of these texts were attempted in Punjabi despite the fact that the region was closely associated with the life of Lord Mahavira and the development of Jain faith. Ravinder Jain and Purshotam Jain took up the onerous task of rendering the more important of the scriptural texts into simple and easily understandable Punjabi as well as to prepare books on different aspects of the Jain faith.

No doubt, Ravinder and Purshotam have been pioneers in producing literature in Punjabi on Jainism, but this does not imply that they have not written in any other language. Prolific writers as they are, they have produced several books in Hindi as well. For example, their Sachitra Bhagwan Mahavira Jivan-Charitra, illustrated biography of Lord Mahavira, which they took up under inspiration of Sadhvi Sudha Ji (disciple of Sadhi Swam Kanta) and which has been edited by Sadhvi Smriti Ji, a disciple of Sadhvi Sudha Ji. The book, based on the scriptural and other literature belonging to Svetambar and Digamber and other sects within Jainism, gives an authentic and comprehensive account of the 72 years-long life of Lor Mahavira. The book has been widely appreciated ana has seen more than one edition. They have also written a biography of Sadhvi Swam Kanta and an autobiographical book entitled Astha Ki Oar Badhate Kadam (Moving Towards Faith).

Ravinder and Purshotam Jain have also contributed to various other books, including volumes in

honour of sadhus and sadhvis. The Mahashramni Abinandan Granth, a volume in honour of Sadhvi Swarn Kanta, to which they contributed and which they co-edited, has been widely accepted in Jain academic circles for some of the research papers it includes. The duo to Ravinder and Purshotam seem to have been divinely blessed with not just the commitment but also the potential to produce such a vast amount of literature. Also, they have the blessing of all Sadhus and Sadhvis in their tradition to continue their noble work.

We find that there have not been many scholars especially in the field of religious studies who might have worked together for long. There may be several reasons behind it, but it goes to the credit of these two that they have continued working together for decades. Obviously, the main reason behind their long association has been their humility which many in the academic world lack. They have no personal motives except the desire to serve their mother-tongue and to carry the Jain message to the Punjabi knowing people. They have been able to work as a team because they are selfless and have the common objective to which they are deeply committed. This has led many to say that they are one soul in two bodies.

If one tries to have a look at the list of books they have produced, one is wonder struck at the huge amount of literature they have produced and are still producing almost all of their works are also available on website, www.jainworld.com, which is accessed from about 150 countries in 27 language editions with 90000 hits per day. This is not an attempt to present a critique of all their works but it will be worthwhile to make here a mention of the books they have authored, edited and translated.

Contribution of Purshotam Jain and Ravinder Jain to Punjabi Jain Literature Inspired by late Jain Nun "Upp Pariwartni Shree Sawaran Kanta Ji Maharaj" Purshotam Jain and Ravinder Jain brothers have jointly presented number of books on Jain Religion in Punjabi Language.

Translation from Ardh Magdhi Prakrit into Punjabi (Gurumukhi Script)

Sr.No.	Name of Book	Publication year
01.	Shree Utradhyan Sutra	1976
02.	Shree Sutrakritang Sutra	1988
03.	Shree Upasak Dashang Sutra	1976
04.	Saman Sutra	2006
05.	Dashve Kalik Sutra	2007
06.	Bhagwan Mahavir De Chonve Updesh	1976
07.	Updesh Rattan Kosh	2005
08.	Nirevalika Sutra (5 Upanga)	2006
09.	Ghachhachara	1997
10.	Ghachhahara	1998
11.	Sanstarik Prkirnak	1998
12.	Rishi Bhashit Sutra	2007

Translation from Hindi (Devnagri) into Punjabi (Gurumukhi Script)

Sr.No.	Name of Book	Publication Book
01.	Bhagwan Mahavir-Sidhant te Updesh	1975
02.	Jain Dharam Darshan	1999
03.	Chanan Munara Mahavir	2009
04.	Aatam Dhyan	2009
05.	Bharti Dharma vich Mutki	2009

Translation from Sanskrit into Punjabi (Gurumukhi Script).

Sr.No.	Name of Book	Publication Year
01.	Bhaktama Stotra	1985
02.	Kalyan Mandir Satotra	1986
03.	Sindhur Parikaran	2004
04.	Prashanoter Rattan Malika	1987
05.	Ath Prashanotra Rattan Malika	1987
06.	Shri Sambeg Kandli Drum	2009
07.	Satt Darve Panchasika	2008

Punjabi Jain literature (Gurumukhi Script).

Sr.No.	Name of Book	Publication Year
01.	Bhagwan Mahavira : A Biography of Lord Mahavir	1976
02.	Jain Dharam : Ek Sankhep Jankari	1988
03.	Puratan Punjab vich Jain Dharam	1987
04.	Jain Sahit Te Sanskriti Di Ruprekha	1976
05.	Jain Agam ek Jankari	1978
06.	Bharti Sahit Vich Bhagwan Mahavir	1988
07.	Jain Dharam De Itihask Mahapurakh	1988
08.	Bodh Sahit Vich Bhagwan Mahavir	1999
09.	Gandharwad	1988
10.	Jain Kahaniyan	2009

Books in Hindi Written by Purshotam Jain (Edited by : Ravinder Jain)

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Aastha Ki our Badhte Kadam	2005
02.	Anjane Rishte	1998
03.	Smarpit Jiwan	1987

Books in Hindi Written by Purshotam Jain & Ravinder Jain

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Mahasharmani	1987
02.	Prachin Punjab Mein Jain Dharam	1999
03.	Sachitra Mahavir Jivan Charitra II Edition	2009

Book in Hindi Written by Ravinder Jain

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Shramnopasak	1987

Edited Books

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Aasthanji	1987
02.	Maha Shramni Abhinandan Granth	1999
03.	Nirewalika Sutra (5 Opang)	1987

The labour of love put in by Ravinder Jain and Purshotam Jain has been acknowledged and their work widely appreciated by the Jain World as well as by various other social and literature organizations. Though they live in humility and comparative obscurity yet many honours have come their way. There have been innumerable occasions when they have been honoured by different organizations within the Jain world, and the limitations of space may not allow mention of all of them. The President of India Giani Zail Singh, invited them to the Rashtrapati Bhavan in Delhi and honoured them (on 26.02.1987) with the title of Sramanopasak. The Languages Department of the Punjab Government, at its function at Sirhand on 25.12.1997, honoured them with a shawl and certificate of commendation. Their work has also been acknowledged by the UNESCO which honoured them with Hindi Sahastra Sevy. The Jain World Foundation at Alpharetta, in the USA also acknowledged their contribution to Jain tradition, and Ms Elizebeth Lehmann, Chairperson of the Award Committee of the Foundation, called them the "Jewels of Jain World" and commended them "for their outstanding and historical service of the cause of Jainism by bringing Jain literature in Punjabi language for the first time in history." But none of these and various other honours and awards they have got has gone to their heads and they continue to serve the cause dear to their heart with the same humility and selflessness.

May God bless both Ravinder Jain and Purshotam Jain many a long and fruitful year ahead so that they continue with their efforts to promote Jainism and in the process make human social life meaningful and happy.

